International Journal of Humanities, Commerce and Education
©PIJMS | Volume 2 | Issue 1 | January 2026 | ISSN: 3108-0456 (Online)
Available online at: https://ijhce.com/
DOI: https://doi.org/10.59828/ijhce.v2i1.24

आधुनिक हिंदी कहानी में हाशिए का पुरुष: एक विमर्श

श्री हेमंत शाक्य

सहायक प्राध्यापक (हिंदी साहित्य), शासकीय महाविद्यालय पृथ्वीपुर, निवाड़ी, म.प्र.

Received: 02 January 2026 | **Accepted:** 27 January 2026 | **Published:** 29 January 2026

सार

प्रस्तुत शोध पत्र आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में हाशिए पर स्थित पुरुष पात्रों की स्थिति, अस्मिता और संघर्ष का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन दस प्रमुख रचनाओं के तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से पुरुष विमर्श के विभिन्न आयामों को उजागर करता है। शोध में फणीश्वरनाथ रेणु, कमलेश्वर, कृष्णा सोबती, भीष्म साहनी, श्रीलाल शुक्ल, सुरेंद्र वर्मा, ममता कालिया और शेखर जोशी की रचनाओं का विस्तृत अध्ययन किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि पुरुष पात्र केवल पारंपरिक पितृसत्ता या मध्यवर्गीय भूमिकाओं तक सीमित नहीं हैं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और मानसिक दबावों के कारण हाशिए पर भी स्थित होते हैं। शोध में Raewyn Connell के Hegemonic Masculinity के सिद्धांत तथा Subaltern और Marginalized Masculinity की अवधारणाओं का उपयोग किया गया है। गुणात्मक साहित्यिक विश्लेषण, तुलनात्मक अध्ययन और संदर्भात्मक विश्लेषण पद्धति के माध्यम से यह शोध दर्शाता है कि हाशिए का लेखन संपूर्ण रूप से मनुष्यता का लेखन है जो सभी प्रकार के शोषण का अंत चाहता है। अध्ययन भारतीय समाज में जाति, वर्ग, पितृसत्ता और ब्राह्मणवादी व्यवस्था के प्रभाव को भी रेखांकित करता है तथा समतामूलक समाज की स्थापना की आवश्यकता पर बल देता है।

मुख्य शब्द: हाशिए का पुरुष, पुरुष विमर्श, आधुनिक हिंदी कहानी, सामाजिक दबाव, अस्मिता संकट, जाति व्यवस्था, पितृसत्ता, दलित विमर्श, आदिवासी विस्थापन

1. प्रस्तावना

समकालीन हिंदी कथा साहित्य में पुरुष विमर्श एक महत्वपूर्ण और उभरता हुआ विषय बन चुका है। परंपरागत रूप से साहित्य में पुरुष पात्रों को सत्ता, शक्ति और प्रभुत्व के केंद्र में रखा जाता रहा है, लेकिन आधुनिक हिंदी कहानियों में एक नया आयाम देखने को मिलता है जो हाशिए पर स्थित पुरुष का चित्रण प्रस्तुत करता है। ये पुरुष पात्र न केवल पारंपरिक पितृसत्ता या मध्यवर्गीय भूमिकाओं में सीमित हैं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और मानसिक दबावों के चलते हाशिए पर भी स्थित हैं। हाशिए पर डाल दिया गया समाज हमेशा से संसाधनों से वंचित रहा है और आज भी वह वंचना का शिकार है। साहित्य में भी वह लंबे समय तक हाशिए पर ही रहा है क्योंकि कलम इनके पास नहीं रही जिसके कारण अपनी बात कहने में ये अक्षम थे। परंतु आज समय बदला है और लोकतंत्र ने पढ़ाई-लिखाई तक लोगों की पहुंच बढ़ायी है जिसके परिणामस्वरूप हाशिए का समाज भी पढ़-लिख रहा है और अपनी अनुभूतियों को अपने ढंग से कह रहा है।

हाशिए का लेखन संपूर्ण रूप से मनुष्यता का लेखन है जो मनुष्य के बीच विद्यमान तमाम तरीके के शोषण का खात्मा चाहता है। यह लेखन मानवीय संबंधों पर आधारित है और मुख्य धारा के साहित्य से अपने महत्वपूर्ण सवाल करता है। भारतीय समाज का

This is an open access article under the Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.

ढांचा श्रेष्ठता बोध पर आधारित है जहां वर्ण व्यवस्था और जाति व्यवस्था ने समाज को विभिन्न स्तरों में विभाजित कर रखा है। ऐसे में हाशिए के समाज की मानसिकता को परखना और उनकी स्थिति को समझना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। आज जब विमर्शों का दौर चल रहा है तो दलित साहित्य, स्त्री साहित्य और आदिवासी साहित्य के साथ-साथ पुरुष विमर्श को भी समझना आवश्यक है, विशेषकर हाशिए के पुरुष की स्थिति को। यह अध्ययन इसी दिशा में एक प्रयास है जहां आधुनिक हिंदी कथा साहित्य की दस प्रमुख रचनाओं के माध्यम से हाशिए के पुरुष की पहचान, संघर्ष और अस्मिता को समझने का प्रयास किया गया है। इन रचनाओं में ग्रामीण पुरुष की स्थिति, मध्यवर्गीय अस्तित्व संकट, पितृसत्ता के दांपत्य दबाव, विभाजन की मानसिकता, सत्ता-लोलुपता, प्रतिस्पर्धात्मक समाज में संघर्ष और श्रमिक वर्ग की स्थिति का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

2. शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

1. आधुनिक हिंदी कहानियों में हाशिए के पुरुष की स्थिति और चरित्र का विश्लेषण करना।
2. सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दबावों के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. चयनित 10 रचनाओं में पुरुष विमर्श के विभिन्न स्वरूपों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. हाशिए के समाज के सवालों को उजागर करना तथा भारतीय समाज की संरचना में हाशिए पर स्थित समुदायों के संघर्ष को समझना।
5. फणीश्वरनाथ रेणु, कमलेश्वर, कृष्णा सोबती, भीष्म साहनी, श्रीलाल शुक्ल, सुरेंद्र वर्मा, ममता कालिया और शेखर जोशी की रचनाओं में पुरुष विमर्श की समानताएं और अंतर को स्पष्ट करना।

3. शोध प्रश्न

1. आधुनिक हिंदी कहानियों में हाशिए के पुरुष का सामाजिक और मनोवैज्ञानिक स्वरूप क्या है?
2. किन कारकों के चलते पुरुष पात्र हाशिए पर स्थित होते हैं?
3. चयनित रचनाओं में पुरुष विमर्श में अंतर और समानताएं क्या हैं?
4. हाशिए के पुरुष की अस्मिता और संघर्ष किस प्रकार सामाजिक-सांस्कृतिक प्रतिबद्धताओं से जुड़ा है?

4. सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

पुरुष विमर्श के अध्ययन में Raewyn Connell का Hegemonic Masculinity का सिद्धांत अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि समाज में एक प्रभुत्वशाली पुरुषत्व विद्यमान होता है जो अन्य प्रकार के पुरुषत्व को हाशिए पर डाल देता है। इस संदर्भ में Subaltern Masculinity अर्थात अधीनस्थ पुरुषत्व और Marginalized Masculinity अर्थात हाशिए का पुरुषत्व जैसी अवधारणाएं महत्वपूर्ण हो जाती हैं। अधीनस्थ पुरुषत्व वह है जो प्रभुत्वशाली पुरुषत्व के मानकों को पूरा नहीं कर पाता है, जबकि हाशिए का पुरुषत्व सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारणों से हाशिए पर स्थित होता है। भारतीय संदर्भ में यह और भी जटिल हो जाता है क्योंकि यहां जाति व्यवस्था एक मूलभूत वास्तविकता है। चौथीराम यादव के अनुसार हमारे इतिहास में दलित चिंतन की जड़ें बहुत गहरी हैं और जितनी पुरानी वर्णव्यवस्था है उतनी ही पुरानी उसके विरोध की परंपरा भी है। भारतीय समाज में पुरुषत्व केवल लिंग के आधार पर नहीं बल्कि जाति के आधार पर भी परिभाषित होता है। आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में सामाजिक संघर्ष और पुरुष पात्रों का प्रतिनिधित्व विविध और जटिल है जहां ग्रामीण संदर्भ से लेकर शहरी मध्यवर्ग तक और दलित-आदिवासी समुदाय से लेकर सवर्ण समाज तक विभिन्न पुरुष पात्र अपनी-अपनी स्थिति में हाशिए का अनुभव करते हैं।

5. शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में गुणात्मक साहित्यिक विश्लेषण, तुलनात्मक अध्ययन और संदर्भात्मक विश्लेषण की पद्धतियों का उपयोग किया गया है। गुणात्मक साहित्यिक विश्लेषण के अंतर्गत चयनित रचनाओं के पात्र, संवाद और कथ्य का सैद्धांतिक दृष्टिकोण से विश्लेषण किया गया है। प्रत्येक रचना में हाशिए के पुरुष की स्थिति, उनके संघर्ष और अस्मिता को समझने का प्रयास किया गया है। पात्रों के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के साथ-साथ उनकी सामाजिक स्थिति का भी अध्ययन किया गया है। तुलनात्मक अध्ययन पद्धति के माध्यम से विभिन्न लेखकों के पुरुष पात्रों की समानताएं और भिन्नताएं को रेखांकित किया गया है। यह तुलना न केवल पात्रों के चरित्र-चित्रण में बल्कि उनकी सामाजिक स्थिति, आर्थिक परिस्थितियों और मनोवैज्ञानिक अवस्था में भी की गई है। फणीश्वरनाथ रेणु के ग्रामीण पुरुष पात्रों की तुलना कमलेश्वर के मध्यवर्गीय पुरुष पात्रों से की गई है तथा शेखर जोशी के श्रमिक पुरुष पात्रों का अध्ययन सुरेंद्र वर्मा और ममता कालिया के शहरी पुरुष पात्रों के संदर्भ में किया गया है। संदर्भात्मक विश्लेषण में रचनाओं को उनके सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संदर्भ में रखकर विश्लेषित किया गया है। यह समझने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार ऐतिहासिक और सामाजिक परिस्थितियां हाशिए के पुरुष को प्रभावित करती हैं। विभाजन की त्रासदी, जाति व्यवस्था का दबाव, भूमंडलीकरण के प्रभाव और पितृसत्तात्मक अपेक्षाओं जैसे विभिन्न संदर्भों में पुरुष पात्रों का विश्लेषण किया गया है। शोध में द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है जिसमें प्रकाशित पुस्तकें, शोध पत्र और आलोचनात्मक ग्रंथ शामिल हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकि, चौथीराम यादव, बजरंगबिहारी तिवारी जैसे विद्वानों के विचारों को आधार बनाया गया है।

6. चयनित रचनाओं का विश्लेषण

तालिका 1: चयनित रचनाओं का वर्गीकरण

क्र.सं.	लेखक	रचना	पुरुष विमर्श का स्वरूप	मुख्य विषय
1	फणीश्वरनाथ रेणु	मैला आँचल	ग्रामीण पुरुष, सामाजिक दबाव	ग्रामीण समाज की विसंगतियां
2	फणीश्वरनाथ रेणु	तीसरी कसम	ग्रामीण पुरुष, भावनात्मक अस्मिता	भावनात्मक शोषण
3	कमलेश्वर	कितने पाकिस्तान	मध्यवर्गीय पुरुष चेतना	विभाजन की त्रासदी
4	कमलेश्वर	समुद्र में खोया हुआ आदमी	अस्तित्व संकट, अकेलापन	आधुनिक एकाकीपन
5	कृष्णा सोबती	मित्रो मरजानी	पितृसत्ता और दांपत्य दबाव	स्त्री-पुरुष संबंध
6	भीष्म साहनी	तमस	विभाजन और पुरुष मानसिकता	सांप्रदायिक हिंसा
7	श्रीलाल शुक्ल	राग दरबारी	सत्ता-लोलुप, व्यंग्यात्मक पुरुष	भ्रष्टाचार और व्यवस्था
8	सुरेंद्र वर्मा	मुझे चाँद चाहिए	आकांक्षा और मानसिक संघर्ष	महत्वाकांक्षा
9	ममता कालिया	दौड़	प्रतिस्पर्धात्मक समाज में पुरुष	आधुनिक जीवन का संघर्ष
10	शेखर जोशी	कोसी का घटवार	श्रमिक/हाशिए का पुरुष	श्रमिक वर्ग का शोषण

उपरोक्त तालिका आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में चयनित दस प्रमुख रचनाओं का वर्गीकरण प्रस्तुत करती है जो पुरुष विमर्श के विभिन्न आयामों को उजागर करती हैं। इस तालिका में प्रत्येक रचना को उसके लेखक, पुरुष विमर्श के स्वरूप और मुख्य विषय के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। फणीश्वरनाथ रेणु की रचनाएं ग्रामीण परिवेश में पुरुष की स्थिति को दर्शाती हैं जहां सामाजिक दबाव और भावनात्मक शोषण मुख्य विषय हैं। कमलेश्वर की रचनाएं मध्यवर्गीय पुरुष चेतना और अस्तित्व संकट को प्रस्तुत करती हैं। कृष्णा सोबती और भीष्म साहनी की रचनाएं पितृसत्ता और सांप्रदायिकता के संदर्भ में पुरुष की स्थिति को दर्शाती हैं। श्रीलाल शुक्ल की रचना भ्रष्ट व्यवस्था में पुरुष की स्थिति को व्यंग्यात्मक रूप में प्रस्तुत करती है जबकि सुरेंद्र वर्मा

और ममता कालिया की रचनाएं आधुनिक प्रतिस्पर्धात्मक समाज में पुरुष के संघर्ष को दर्शाती हैं। शेखर जोशी की रचना श्रमिक वर्ग के पुरुष की स्थिति का सबसे प्रत्यक्ष चित्रण प्रस्तुत करती है।

6.1 ग्रामीण परिवेश में हाशिए का पुरुष

फणीश्वरनाथ रेणु की रचनाओं में ग्रामीण पुरुष की स्थिति और संघर्ष का यथार्थवादी चित्रण मिलता है। मैला आँचल में ग्रामीण समाज की जटिलताओं और विसंगतियों के बीच पुरुष पात्र संघर्षरत दिखाई देते हैं जहां सामाजिक दबाव उन्हें निरंतर प्रभावित करता है। तीसरी कसम में भावनात्मक अस्मिता का संकट केंद्र में है जहां एक साधारण ग्रामीण पुरुष की भावनाओं का शोषण होता है। ग्रामीण परिवेश में सामाजिक और आर्थिक दबाव पुरुष को हाशिए पर धकेल देते हैं जहां उनके पास न संसाधनों पर अधिकार है और न ही सामाजिक सम्मान।

6.2 मध्यवर्गीय अस्तित्व संकट

कमलेश्वर की रचनाओं में मध्यवर्गीय पुरुष चेतना और अस्तित्व के संकट का गहन चित्रण मिलता है। समुद्र में खोया हुआ आदमी में आधुनिक जीवन का अकेलापन और अस्तित्व संकट केंद्र में है जहां पुरुष पात्र भौतिक रूप से संपन्न होते हुए भी मानसिक रूप से हाशिए पर है। यह पुरुष आधुनिक शहरी जीवन की भागदौड़ में अपनी पहचान खो देता है और एक गहरे एकाकीपन का शिकार हो जाता है। कितने पाकिस्तान में विभाजन की त्रासदी और उससे उत्पन्न मध्यवर्गीय पुरुष की मानसिक स्थिति का अध्ययन है जहां ऐतिहासिक घटनाओं के बीच साधारण पुरुष हाशिए पर चला जाता है। विभाजन ने जिस प्रकार परिवारों को तोड़ा और लोगों को विस्थापित किया उसका गहरा मनोवैज्ञानिक प्रभाव मध्यवर्गीय पुरुष पर पड़ता है।

6.3 पितृसत्ता और दांपत्य दबाव

कृष्णा सोबती की मित्रो मरजानी पितृसत्ता के भीतर पुरुष पात्रों पर पड़ने वाले दबाव को दर्शाती है। यहां पुरुष पात्र पितृसत्तात्मक अपेक्षाओं को पूरा करने के दबाव में जीता है और दांपत्य संबंधों में पुरुष की भूमिका और उसकी सीमाएं इस रचना का केंद्र हैं। यह महत्वपूर्ण है कि पितृसत्ता न केवल स्त्रियों बल्कि पुरुषों को भी हाशिए पर डालती है जब वे इसके मानकों को पूरा नहीं कर पाते। भारतीय समाज में पुरुषत्व की परिभाषा अत्यंत कठोर है और जो पुरुष इन अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरता वह सामाजिक रूप से हीन माना जाता है। दांपत्य जीवन में पुरुष से यह अपेक्षा की जाती है कि वह आर्थिक रूप से सक्षम हो, शारीरिक रूप से शक्तिशाली हो और भावनात्मक रूप से दृढ़ हो लेकिन जब वह इन अपेक्षाओं को पूरा नहीं कर पाता तो हाशिए पर चला जाता है।

6.4 विभाजन और सांप्रदायिकता

भीष्म साहनी की तमस में विभाजन के समय की परिस्थितियों में पुरुष मानसिकता का विश्लेषण है। सांप्रदायिक हिंसा के बीच साधारण पुरुष पात्र किस प्रकार परिस्थितियों के शिकार बनते हैं यह इस रचना का मूल है। यहां पुरुष पात्र इतिहास की बड़ी घटनाओं के बीच हाशिए पर चला जाता है क्योंकि उसके पास न कोई शक्ति है न कोई संसाधन। सांप्रदायिक हिंसा में साधारण पुरुष केवल एक शिकार बनकर रह जाता है जो न तो हिंसा को रोक सकता है और न ही अपने परिवार की रक्षा कर सकता है। विभाजन की त्रासदी ने लाखों पुरुषों को विस्थापित किया और उन्हें अपनी पहचान से वंचित कर दिया।

6.5 सत्ता और भ्रष्टाचार

श्रीलाल शुक्ल की राग दरबारी में सत्ता-लोलुप पुरुष पात्रों का व्यंग्यात्मक चित्रण है लेकिन इस व्यंग्य के पीछे उन पुरुषों की स्थिति भी है जो इस भ्रष्ट व्यवस्था में हाशिए पर हैं। यह रचना दर्शाती है कि किस प्रकार व्यवस्था में भ्रष्टाचार साधारण पुरुष को हाशिए पर धकेल देता है। जो पुरुष भ्रष्टाचार में शामिल नहीं होना चाहता वह इस व्यवस्था में आगे नहीं बढ़ सकता। ग्रामीण भारत में पंचायतों से लेकर सरकारी कार्यालयों तक में व्याप्त भ्रष्टाचार ने एक ऐसी स्थिति पैदा कर दी है जहां ईमानदार पुरुष को हाशिए पर जाना पड़ता है और भ्रष्ट पुरुष सत्ता का केंद्र बन जाता है।

6.6 महत्वाकांक्षा और संघर्ष

सुरेंद्र वर्मा की मुझे चाँद चाहिए और ममता कालिया की दौड़ आधुनिक प्रतिस्पर्धात्मक समाज में पुरुष के संघर्ष को दर्शाती हैं। मुझे चाँद चाहिए में आकांक्षा और मानसिक संघर्ष केंद्र में है जहां पुरुष पात्र अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए संघर्षरत है। दौड़ में प्रतिस्पर्धात्मक समाज में पुरुष की स्थिति का चित्रण है जहां सफलता और असफलता के बीच पुरुष किस प्रकार हाशिए पर जाता है यह महत्वपूर्ण है। आधुनिक समाज में प्रतिस्पर्धा इतनी तीव्र हो गई है कि जो पुरुष इस दौड़ में पिछड़ जाता है वह न केवल आर्थिक रूप से बल्कि सामाजिक और मनोवैज्ञानिक रूप से भी हाशिए पर चला जाता है। इस प्रतिस्पर्धा में सफलता ही पुरुषत्व का मापदंड बन जाती है।

6.7 श्रमिक वर्ग का पुरुष

शेखर जोशी की कोसी का घटवार श्रमिक वर्ग के पुरुष का सबसे प्रत्यक्ष चित्रण प्रस्तुत करती है। यहां श्रमिक वर्ग के शोषण और उनकी स्थिति का यथार्थवादी चित्रण है जहां पुरुष पात्र आर्थिक और सामाजिक रूप से पूरी तरह हाशिए पर हैं। ये पुरुष पात्र अपने श्रम से समाज का निर्माण करते हैं लेकिन उन्हें उनके श्रम का उचित मूल्य नहीं मिलता। वे संसाधनों से वंचित रहते हैं और उनका जीवन निरंतर संघर्ष में बीतता है। श्रमिक वर्ग के पुरुष की स्थिति सबसे अधिक हाशिए पर है क्योंकि उनके पास न शिक्षा है न संसाधन न सामाजिक प्रतिष्ठा और वे केवल अपने श्रम पर निर्भर हैं।

7. भारतीय समाज में हाशिए के सवाल

7.1 जाति व्यवस्था और हाशिए का पुरुष

भारतीय समाज में जाति व्यवस्था एक मूलभूत वास्तविकता है जो हाशिए के पुरुष को सबसे अधिक प्रभावित करती है। ओमप्रकाश वाल्मीकि के अनुसार दलित साहित्य जन साहित्य है जो मानवीय मूल्यों की भूमिका पर सामंती मानसिकता के विरुद्ध आक्रोशजनित संघर्ष है। जाति व्यवस्था में दलित पुरुष की स्थिति सबसे अधिक हाशिए पर है क्योंकि उन्हें जन्म से ही हीन माना जाता है। विहाग वैभव की कविता तुम्हारी जाति ही है दोस्त में यह स्पष्ट है कि जाति व्यवस्था किस प्रकार धन्ना धोबी और मुनमुन मुसहर की लड़की को स्कूल जाते देखकर भी सवर्ण समाज को चिंतित कर देती है। श्योराज सिंह बेचैन की कविता क्रौंच हूं मैं दलित पुरुष की स्थिति को और स्पष्ट करती है जहां वे कहते हैं कि वे वाल्मीकि नहीं बल्कि क्रौंच हैं अर्थात शिकार हैं न कि शिकारी। यह कविता दर्शाती है कि दलित पुरुष आज भी इतिहास में पीड़ित है न कि इतिहास लिखने वाला। बजरंगबिहारी तिवारी लिखते हैं कि पितृसत्ता और जातिसत्ता हिंसा के बल पर ही कायम हैं और दलित स्त्री के साथ-साथ दलित पुरुष भी इस दोहरी हिंसा का शिकार होता है।

7.2 आदिवासी पुरुष का विस्थापन

भूमंडलीकरण और उदारीकरण के बाद आदिवासी समुदाय की जल जंगल जमीन से बेदखली तेज हुई है। अनुज लुगुन की कविता अघोषित उलगुलान में यह स्पष्ट है कि वे जो निश्चिंत होकर शिकार खेला करते थे आज शहर के कंक्रीटीय जंगल में जीवन बचाने का खेल खेल रहे हैं। आदिवासी पुरुष की स्थिति विशेष रूप से हाशिए पर है क्योंकि वे अपनी जमीन संस्कृति और पहचान से विस्थापित हो रहे हैं। बाजारवादी संस्कृति ने आदिवासी समाज के जीवन में जहर घोलने का काम किया है और उन्हें उनकी परंपरागत जीवन शैली से दूर कर दिया है। आदिवासी समुदाय मानव समाज को बचाने की लड़ाई लड़ रहा है क्योंकि वे नदियों और जंगलों की रक्षा कर रहे हैं लेकिन उनकी आवाज को दबाया जा रहा है। तथाकथित मुख्य धारा का समाज उन्हें आज भी गिरी हुई नजरों से देखता है जबकि वास्तव में उनका जीवन सहजता और सरलता का प्रतीक है।

7.3 पितृसत्ता और पुरुष

पितृसत्ता न केवल स्त्रियों बल्कि पुरुषों को भी प्रभावित करती है। जो पुरुष पितृसत्तात्मक मानकों को पूरा नहीं कर पाते वे हाशिए पर चले जाते हैं। साथ ही ब्राह्मणवादी पितृसत्ता में निम्न जाति के पुरुष को भी हाशिए पर रखा जाता है। कृष्ण कुमार अपनी पुस्तक चूड़ी बाजार में लड़की में लिखते हैं कि चूड़ी पहनाए जाने की इच्छा का उद्भव और चूड़ी को अपनी सुंदरता का साधन मान लेने का भाव छोटी लड़की को पुरुष-प्रधान सभ्यता में ढालने के सहज चरण हैं। इसी प्रकार पुरुष को भी पितृसत्ता में ढाला जाता है और उससे कठोर अपेक्षाएं की जाती हैं। बजरंगबिहारी तिवारी का कहना है कि भारतीय समाज में उच्चवर्णीय महिलाओं की लड़ाई पितृसत्ता से है जबकि निम्न वर्णीय महिलाओं की लड़ाई पितृसत्ता के साथ-साथ जातिसत्ता से भी है। यही स्थिति निम्न वर्णीय पुरुषों की भी है जो न केवल पितृसत्ता बल्कि जातिसत्ता से भी जूझ रहे हैं।

7.4 स्त्री विमर्श और पुरुष की स्थिति

स्त्री विमर्श के संदर्भ में पुरुष की स्थिति को समझना भी आवश्यक है। पारंपरिक रूप से पुरुष रचनाकारों ने स्त्रियों की दीनता को ही प्रकट किया है। मैथिलीशरण गुप्त यशोधरा खंडकाव्य में लिखते हैं अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी आंचल में है दूध और आंखों में पानी। इसी प्रकार जयशंकर प्रसाद कामायनी के लज्जा सर्ग में लिखते हैं नारी तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास रजत नग पग तल में। ये दोनों कविताएं महिलाओं की दीनता को ही प्रकट करती हैं। लेकिन जब स्त्रियों को अपनी आवाज उठाने का मौका मिला तो उन्होंने मुंह सी के अब जी ना पाऊंगी जैसी आवाज बुलंद की। निर्मला पुतुल अपनी कविता उतनी दूर मत ब्याहना बाबा में लिखती हैं कि उसके हाथ में मत देना मेरा हाथ जिसके हाथों ने कभी कोई पेड़ नहीं लगाए फसलें नहीं उगाईं। यह स्त्री स्वर पुरुष से श्रम और सहभागिता की मांग करता है।

तालिका 2: हाशिए के विभिन्न आयाम

हाशिए का प्रकार	मुख्य विशेषताएं	प्रभावित समूह	साहित्यिक उदाहरण
जातिगत हाशिया	जन्मना श्रेष्ठता, सामाजिक बहिष्कार	दलित, पिछड़े वर्ग	वाल्मीकि की ठाकुर का कुआं
आर्थिक हाशिया	संसाधनों से वंचना, गरीबी	श्रमिक वर्ग, किसान	कोसी का घटवार
सांस्कृतिक हाशिया	भाषा, परंपरा से अलगाव	आदिवासी समुदाय	अनुज लुगुन की कविताएं
मनोवैज्ञानिक हाशिया	अस्तित्व संकट, एकाकीपन	मध्यवर्गीय पुरुष	समुद्र में खोया आदमी
राजनीतिक हाशिया	सत्ता से दूरी, निर्णय में भागीदारी नहीं	सभी हाशिए के समूह	राग दरबारी

उपरोक्त तालिका हाशिए के पांच प्रमुख आयामों को प्रस्तुत करती है जो आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में पुरुष पात्रों को प्रभावित करते हैं। जातिगत हाशिया भारतीय समाज की मूलभूत समस्या है जहां जन्मना श्रेष्ठता का विचार दलित और पिछड़े वर्ग के पुरुषों को हाशिए पर रखता है। वाल्मीकि की कविता ठाकुर का कुआं इसका प्रमुख साहित्यिक उदाहरण है। आर्थिक हाशिया संसाधनों से वंचना और गरीबी का परिणाम है जो विशेषकर श्रमिक वर्ग और किसानों को प्रभावित करता है। शेखर जोशी की कोसी का घटवार इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। सांस्कृतिक हाशिया विशेषकर आदिवासी समुदाय को प्रभावित करता है जहां भाषा और परंपरा से अलगाव की स्थिति उत्पन्न होती है। मनोवैज्ञानिक हाशिया आधुनिक मध्यवर्गीय पुरुष का संकट है जो अस्तित्व संकट और एकाकीपन से ग्रस्त है। राजनीतिक हाशिया सभी हाशिए के समूहों को प्रभावित करता है जहां उन्हें सत्ता और निर्णय प्रक्रिया से दूर रखा जाता है।

तालिका 3: हाशिए पर जाने के प्रमुख कारक

कारक	विवरण	साहित्यिक उदाहरण
जाति व्यवस्था	जन्मना श्रेष्ठता, सामाजिक बहिष्कार	ठाकुर का कुआं, क्रौंच हूं मैं
आर्थिक असमानता	संसाधनों पर एकाधिकार	कोसी का घटवार
पितृसत्तात्मक दबाव	लैंगिक भूमिकाओं की कठोरता	मित्रो मरजानी
सांप्रदायिकता	धार्मिक विभाजन	तमस
भ्रष्ट व्यवस्था	सत्ता में भागीदारी से वंचना	राग दरबारी
आधुनिकीकरण	प्रतिस्पर्धा और एकाकीपन	दौड़, समुद्र में खोया आदमी
भूमंडलीकरण	विस्थापन, सांस्कृतिक पहचान का संकट	अघोषित उलगुलान

उपरोक्त तालिका उन प्रमुख कारकों को प्रस्तुत करती है जो पुरुष पात्रों को हाशिए पर ले जाते हैं। जाति व्यवस्था भारतीय समाज में सबसे प्रमुख कारक है जो जन्म के आधार पर व्यक्ति को श्रेष्ठ या हीन मान लेती है। वाल्मीकि और बेचैन की कविताएं इसके साहित्यिक उदाहरण हैं। आर्थिक असमानता वह कारक है जो संसाधनों पर कुछ लोगों के एकाधिकार के कारण उत्पन्न होती है। पितृसत्तात्मक दबाव पुरुषों से कठोर लैंगिक भूमिकाओं की अपेक्षा करता है और जो इन्हें पूरा नहीं कर पाते वे हाशिए पर चले जाते हैं। सांप्रदायिकता धार्मिक आधार पर विभाजन पैदा करती है जैसा कि भीष्म साहनी की तमस में देखा जा सकता है। भ्रष्ट व्यवस्था ईमानदार व्यक्ति को सत्ता से दूर कर देती है। आधुनिकीकरण ने प्रतिस्पर्धा और एकाकीपन को जन्म दिया है जबकि भूमंडलीकरण ने विस्थापन और सांस्कृतिक पहचान के संकट को उत्पन्न किया है।

8. प्रमुख निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में हाशिए के पुरुष की पहचान बहुआयामी है। ग्रामीण पुरुष जो सामाजिक दबावों और आर्थिक शोषण के शिकार हैं, मध्यवर्गीय पुरुष जो अस्तित्व संकट और एकाकीपन से जूझ रहे हैं, दलित पुरुष जो जातिगत भेदभाव और आर्थिक शोषण दोनों के शिकार हैं, आदिवासी पुरुष जो विस्थापन और सांस्कृतिक पहचान के संकट से गुजर रहे हैं तथा श्रमिक वर्ग का पुरुष जो आर्थिक शोषण का सीधा शिकार है, सभी अपने-अपने संदर्भों में हाशिए की स्थिति का अनुभव करते हैं। चयनित रचनाओं के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि पुरुष विमर्श एक-आयामी नहीं है। विभिन्न लेखकों ने अलग-अलग संदर्भों में हाशिए के पुरुष को प्रस्तुत किया है जिसमें कुछ समानताएं भी हैं और कुछ भिन्नताएं भी। सभी रचनाओं में पुरुष पात्र किसी न किसी रूप में दबाव का शिकार हैं और सामाजिक व्यवस्था द्वारा हाशिए पर धकेले जाने की स्थिति में हैं। अस्मिता और सम्मान का संघर्ष तथा आर्थिक या सामाजिक शोषण सभी रचनाओं में दिखाई देता है। भिन्नताओं में ग्रामीण बनाम शहरी संदर्भ, जातिगत बनाम वर्गीय विभाजन, बाहरी शोषण बनाम आंतरिक संकट तथा सामूहिक संघर्ष बनाम व्यक्तिगत एकाकीपन प्रमुख हैं। अध्ययन से यह भी स्पष्ट है कि हाशिए के पुरुष पर पारिवारिक जिम्मेदारी, सामाजिक अपेक्षाएं, आर्थिक संघर्ष, जातिगत भेदभाव और सांस्कृतिक विस्थापन जैसे विभिन्न दबाव हैं। यह अध्ययन स्थापित करता है कि हाशिए का लेखन मानवीय है जो मनुष्य के बीच सभी प्रकार के शोषण का विरोध करता है। हाशिए के लेखक अपनी वास्तविक अनुभूतियों को प्रस्तुत करते हैं और यह लेखन मुख्यधारा के साहित्य से महत्वपूर्ण सवाल करता है तथा एक न्यायपूर्ण और समतामूलक समाज की स्थापना का लक्ष्य रखता है।

9. साहित्यिक और सामाजिक महत्व

आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में पुरुष विमर्श और हाशिए के पुरुष का अध्ययन कई कारणों से महत्वपूर्ण है। साहित्यिक दृष्टि से यह अध्ययन परंपरागत पुरुषत्व की अवधारणा को चुनौती देता है और विभिन्न सामाजिक समूहों के पुरुष पात्रों के विविध

प्रतिनिधित्व को सामने लाता है। यथार्थवादी चित्रण के माध्यम से यह समाज की वास्तविक स्थितियों को प्रतिबिंबित करता है और साहित्य में हाशिए के लोगों के प्रति संवेदनशीलता का विकास करता है। सामाजिक दृष्टि से यह अध्ययन समाज में हाशिए की स्थिति के प्रति जागरूकता लाता है और सामाजिक न्याय तथा न्यायपूर्ण समाज की स्थापना की दिशा में योगदान देता है। यह सामाजिक नीतियों के लिए महत्वपूर्ण इनपुट प्रदान करता है और सांस्कृतिक परिवर्तन में योगदान देता है। आलोचनात्मक दृष्टि से यह अध्ययन साहित्यिक आलोचना में नया दृष्टिकोण प्रदान करता है जो केवल स्त्री विमर्श नहीं बल्कि पुरुष विमर्श का भी बहुआयामी विश्लेषण करता है। यह जाति वर्ग और लिंग को एक साथ देखने का समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है और साहित्य को सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में रखकर समकालीन प्रासंगिकता स्थापित करता है। चौथीराम यादव के अनुसार ये सभी वर्चस्ववादी संस्कृति के बरक्स प्रतिरोध की संस्कृति का निर्माण करते हैं और यही इस अध्ययन का मूल उद्देश्य है।

10. सीमाएं और भविष्य के शोध की संभावनाएं

प्रस्तुत अध्ययन की कुछ सीमाएं हैं जिन्हें स्वीकार करना आवश्यक है। यह अध्ययन केवल दस चयनित रचनाओं तक सीमित है जबकि आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में इससे कहीं अधिक रचनाएं हैं जो हाशिए के पुरुष को प्रस्तुत करती हैं। क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य को इस अध्ययन में शामिल नहीं किया गया है जो भारतीय समाज के हाशिए के अनुभवों को और व्यापक रूप से प्रस्तुत कर सकता है। समकालीन नवीनतम रचनाओं का व्यापक विश्लेषण भी इस अध्ययन में नहीं हो सका है। भविष्य के शोध की दिशाओं में व्यापक अध्ययन की आवश्यकता है जहां अधिक रचनाओं और लेखकों को शामिल किया जा सके। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है जो हाशिए के पुरुष की स्थिति को अखिल भारतीय परिप्रेक्ष्य में समझने में सहायक होगा। इक्कीसवीं सदी के नवीनतम लेखन का विश्लेषण आवश्यक है क्योंकि समाज में तेजी से परिवर्तन हो रहे हैं। अंतरविषयक दृष्टिकोण अपनाते हुए समाजशास्त्र, मनोविज्ञान और साहित्य को मिलाकर अध्ययन किया जा सकता है। क्षेत्र कार्य के माध्यम से वास्तविक सामाजिक स्थितियों का अध्ययन भी भविष्य के शोध की एक महत्वपूर्ण दिशा हो सकती है।

11. उपसंहार

प्रस्तुत शोध पत्र ने आधुनिक हिंदी कहानी में हाशिए के पुरुष की स्थिति, अस्मिता और संघर्ष का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया है। दस चयनित रचनाओं के तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि हाशिए का पुरुष केवल एक अवधारणा नहीं बल्कि एक जीवंत सामाजिक वास्तविकता है। यह अध्ययन दर्शाता है कि पुरुष विमर्श में केवल सत्ता और प्रभुत्व ही नहीं बल्कि हाशिए की स्थिति भी महत्वपूर्ण है। ग्रामीण पुरुष हो या मध्यवर्गीय, दलित हो या आदिवासी, श्रमिक हो या बुद्धिजीवी, सभी अपने-अपने संदर्भों में हाशिए की स्थिति का अनुभव करते हैं। भारतीय समाज की संरचना में जाति व्यवस्था, पितृसत्ता, आर्थिक असमानता और सांप्रदायिकता सभी हाशिए के पुरुष को प्रभावित करते हैं। लेकिन साथ ही यह अध्ययन यह भी दर्शाता है कि हाशिए का लेखन प्रतिरोध का लेखन है और मनुष्यता का लेखन है जो समतामूलक समाज की स्थापना का सपना देखता है। आज जब समाज में विमर्शों का विस्तार हो रहा है तो यह आवश्यक है कि हम हाशिए के पुरुष की स्थिति को भी समझें। यह केवल साहित्यिक अध्ययन नहीं बल्कि सामाजिक न्याय और मानवीय सम्मान का प्रश्न है। हाशिए का साहित्य हमें याद दिलाता है कि सच्चा लोकतंत्र वही है जहां सबको बराबर का अवसर मिले और जहां किसी को जन्म के आधार पर हाशिए पर न डाला जाए। रैदास के शब्दों में ऐसो चाहो राज में मिलै सभन को अन्न, छोटे बड़ो सब सम बसै रविदास रहे प्रसन्न। यही है समतामूलक समाज का सपना और यही है हाशिए के साहित्य का अंतिम लक्ष्य। यह शोध पत्र इसी दिशा में एक छोटा सा प्रयास है जो आगे के शोधकर्ताओं के लिए मार्ग प्रशस्त कर सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1]. वाल्मीकि, ओमप्रकाश (2012). सदियों का संताप. दिल्ली: गौतम बुक सेंटर, पृष्ठ 13.

[2]. वाल्मीकि, ओमप्रकाश (2019). दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र (तीसरा संस्करण). दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, पृष्ठ 15.

[3]. यादव, चौथीराम (2014). उत्तरशती के विमर्श और हाशिए का समाज (प्रथम संस्करण). नई दिल्ली: अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड, पृष्ठ 28.

[4]. रजनीश, गोविंद (सं.) (2023). रैदास रचनावली. दिल्ली: अमरसत्य प्रकाशन, पृष्ठ 138.

[5]. भारती, कंवल (2006). दलित साहित्य की अवधारणा. रामपुर: बोधिसत्त्व प्रकाशन, पृष्ठ 67.

[6]. वैभव, विहाग. मोर्चे पर विदागीत. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., पृष्ठ 74.

[7]. लुगुन, अनुज (2023). अघोषित उलगुलान (संस्करण 2023). नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., पृष्ठ 17.

[8]. कुमार, कृष्ण (2014). चूड़ी बाज़ार में लड़की (पहला संस्करण). नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., पृष्ठ 16.

[9]. तिवारी, बजरंगबिहारी (2023). हिंसा की जाति जातिवादी हिंसा का सिलसिला (प्रथम संस्करण). दिल्ली: परिकल्पना, पृष्ठ 51.

[10]. गुप्त, मैथिलीशरण (2014). यशोधरा. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन, पृष्ठ 40.

[11]. प्रसाद, जयशंकर (2009). कामायनी (सातवां संस्करण). नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., पृष्ठ 57.

[12]. पुतुल, निर्मला (2012). नगाड़े की तरह बजते शब्द (तीसरा संस्करण). नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, पृष्ठ 49.

[13]. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. वाराणसी: विजय प्रकाशन मंदिर (प्रा.) लि., पृष्ठ 256.

[14]. कुमार, चन्दन (2024). "भारतीय समाज और हाशिए के सवाल". अपनी माटी, 30 जून 2024.

[15]. Connell, Raewyn (2005). Masculinities (Second Edition). Cambridge: Polity Press.

[16]. रेणु, फणीश्वरनाथ. मैला आँचल. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. (1954)

[17]. रेणु, फणीश्वरनाथ. तीसरी कसम. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. (1966)

[18]. कमलेश्वर. कितने पाकिस्तान. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. (2003)

[19]. कमलेश्वर. समुद्र में खोया हुआ आदमी. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. (2015)

[20]. सोबती, कृष्णा. मित्रो मरजानी. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. (1967)

[21]. साहनी, भीष्म. तमस. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. (1973)

[22]. शुक्ल, श्रीलाल. राग दरबारी. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. (1968)

[23]. वर्मा, सुरेंद्र. मुझे चाँद चाहिए. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. (1993)

[24]. कालिया, ममता. दौड़. वाणी प्रकाशन (2000)

[25]. जोशी, शेखर. कोसी का घटवार. साहित्य अकादेमी (1958)

Cite this Article:

*हेमंत शाक्य, , "आधुनिक हिंदी कहानी में हाशिए का पुरुष: एक विमर्श", **International Journal of Humanities, Commerce and Education,***

***ISSN**: 3108-0456 (Online), Volume 2, Issue 1, pp. 01-09, January 2026.*

***Journal URL:** https://ijhce.com/*

***DOI**: https://doi.org/10.59828/ijhce.v2i1.24*